संपादकीय

26 सितंबर संन्यास महोत्सव

अतीत के संन्यास को मैं भविष्य के संन्यास से भी तोड़ता हूं। अतीत का संन्यास आज मरणशैय्या पर पड़ा है, क्योंकि संन्यास की पुरानी व्यवस्था सड़ गयी है। इसलिए संन्यास को नए अर्थ, नए उद्‌भाव देने की जरूरत हो गयी हैं। संन्यास तो बचना ही चाहिए। वह तो जीवन की गहरी-से-गहरी संपदा है।

– ओशो

ओशोधाम, नई दिल्ली के एक ग्रीष्मकालीन ध्यान-शिविर में एक वर्षीय नयी युवा संन्यासिन मा आनंद प्रभूति का वार्तालाप के दौरान प्रस्फुटित एक सहज उद्‌गार हृदयस्पर्शी लगा : ओशो एकमात्र सद्‌गुरु हैं जिनकी शरीर से मुक्त हो जाने के बावजूद भी उपस्थिति का अहसास सदा बना रहता है। यह कोई इंटरव्यू नहीं था। वह नयी-नवेली संन्यासिन है और यह उसके कुंआरे निर्मल चित्त की भाव-अभिव्यक्ति है। और कितनी सच है! उसका वक्तव्य सुन कर मेरे हृदय में भी एक मधुरिमा प्रवाहित होने लगी। ओशो का वह वक्तव्य मेरे सामने पुनः जीवंत हो उठा कि कृष्ण और मीरा के बीच में हज़ारों साल का फासला है, लेकिन मीरा के लिए कृष्ण साकार हो गए हैं। वहां समय और स्थान की दूरी कोई मायने नहीं रखती।

ओशो को देह-मुक्त हुए अभी 14 वर्ष ही हुए हैं। लाखों लोग हैं जिन्होंने ओशो को सशरीर देखा है, दर्शन किए हैं, उनका साकार सान्निध्य प्राप्त किया है। लेकिन लाखों प्रेमी ऐसे भी हैं, प्रभूति जैसे युवा निर्मल हृदय संन्यासी, जिन्होंने ओशो को सशरीर नहीं देखा है, लेकिन उनके साथ चमत्कारों का चमत्कार घटित हो रहा है : ओशो उन्हें सदा अपने आसपास अनुभव होते हैं। प्रभूति ने गत वर्ष गुरुपूर्णिमा के अवसर पर ओशोधाम नई दिल्ली में संन्यास दीक्षा प्राप्त की थी। और इस वर्ष उससे यह सहज उद्‌गार सुनने को मिला।

इन दिनों देश भर में अनेकानेक स्थानों पर ध्यान-शिविर घटित हो रहे हैं और प्रभूति जैसे युवा लोग ओशो के नव-संन्यास में पूरी उमंग तथा उत्साह के साथ दीक्षित हो रहे हैं। और यह घटना केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। इस वर्ष मलेशिया में एक ध्यान शिविर में चीनी मूल के 13 व्यक्तियों ने भी संन्यास में दीक्षा ली।

ओशो का नव-संन्यास आंदोलन निश्चित ही यौवन के उद्दाम वेग से आगे बढ़ रहा है। यह अपने-आप में एक उत्सवी घटना है। इसलिए हम प्रतिवर्ष संन्यास के इस महोत्सव को बड़े पैमाने पर मनाने के लिए उस विशेष स्थान पर एकत्रित होते हैं, जहां इस संन्यास की गंगोत्री का शुभारंभ हुआ था। वह स्थान मनाली है, जहां 26 सितंबर, 1970 को ओशो ने विश्व के समक्ष अपने हंसते-खेलते सृजनात्मक संन्यास की अवधारणा को प्रस्तुत किया था। भगवान कृष्ण पर उनके प्रवचन हो रहे थे और समग्र जीवन को आनंद से स्वीकार करने वाला कृष्ण जैसे संन्यास को ओशो ने पुनरुज्जीवित किया। वह गंगोत्री आज संन्यास की महागंगा बन गयी।

गत वर्ष करनाल के मित्रों ने मनाली में प्रथम बार 26 से 28 सितंबर को एक ध्यान शिविर के माध्यम से इस महोत्सव को मनाने का आयोजन किया था। लेकिन इस बार इसके आयोजन के लिए और अच्छी तैयारी की गयी है। करनाल के ही स्वामी प्रेम अनुराग, जिन्होंने ताओ विज़न के अंतर्गत भजन-कीर्तन का मधुर संगीत प्रकाशित किया है—कीर्तन ध्यान, बाजत अनहद नाद, प्रेम दिवाने, इसक अलह का रंग—उन्होंने पूरे उत्साह से मनाली में नव-संन्यास महोत्सव के लिए 24 से 26 सितंबर को ध्यान-शिविर का आयोजन किया है। इस शिविर का संचालन करने के लिए मनाली में उपस्थित होंगे—मा धर्म ज्योति, मा योग नीलम, स्वामी वैराग्य अमृत तथा स्वामी आनंद वैराग्य। और 200 से अधिक संन्यासी मित्रों के सम्मिलित होने की संभावना है। यह एक अपूर्व मिलन होगा। वे सभी नए मित्र जो ओशो के प्रति प्रेम से भर गए हैं, जिन्हें प्रभूति की भांति आनंद की पहली किरणें नव-संन्यास के लिए अनुप्रेरित व आंदोलित कर रही हैं, उन सभी का स्वागत है; यह दीक्षा-समारोह 26 सितंबर के दिन ही घटित होगा।

प्रस्तुत अंक में आप पढ़ेंगे ओशो के नव-संन्यास के संबंध में ओशो की देशना लिए हुए कुछ प्रवचनांश। संक्षेप में कहें तो संन्यास का आधार है ध्यान और ध्यान आधार है प्रेम का और सृजन का।

– स्वामी चैतन्य कीर्ति